International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol. 11 No. 3 Jan-Feb 2024

ज्ञानरंजन की कहानियों में शहरी जीवन

Dr. Gyani Devi Gupta
H.O.D. HINDI Department, Guru Kashi University Talwandi sabo, Batinda (Panjab)
Corresponding Author – Dr. Gyani Devi Gupta
Email: dr.rameshprasadkol@gmail.com
DOI-10.5281/zenodo.10726856

शोध सारांश

ज्ञानरंजन इलाहाबाद के रहने वाले हैं। उनका जन्म इलाहाबाद में ही हुआ है। इसलिए उनका अगाध प्रेम इलाहाबाद के साथ जुड़ा हुआ है। ज्ञानरंजन ने अपनी कहानियों में शहर का मार्मिक अध्ययन करते हुए अपनी कहानियों की पृष्ठभूमि शहर ही रखी है, तथा जहां शहर नहीं होता। वहां पर उनकी कहानियों में शहर की छाया याद झलक देखने को मिलती है। शहर ज्ञानरंजन की नस नस में समाया हुआ है। वह शहर के हर क्षेत्र से वाकिफ हैं। शहरी क्षेत्र की कोई भी ऐसा ऐसी जगह नहीं है जो यह नहीं जानते हैं इन्होंने शहर की हर परिस्थितियों को अपनी कहानियों में स्थान दिया है, चाहे वह राजनीतिक हो सामाजिक–आर्थिक हो बारीकी से अध्ययन करते हुए प्रस्तुत किया है इस पर ममता कालिया लिखती है कि ''जिस तरह ज्ञान चौंत का गुलाब ,लौकी की लतर, और अमरूद का फूल, चयन करने में चूक नहीं करते, उसी तरह वह इस शहर की कोई भी गंद रूप रंग रस चयन में चूक नहीं करते, उनके कहानियां इस शहर की एकांतिकता से ही निकलती है। जिस प्रकार एक प्रेमी के लिए अपनी प्रेमिका का प्यार होता है। उसी तरह ज्ञान रंजन के लिए शहर भी वैसा ही एक प्रेम है जो उनकी हर नज्म की नब्ज में समाया हुआ है।

मूल शब्दः पृष्ठभूमि, परिस्थिति, किशोरावस्था, निहायत, मोहभंग

प्रस्तावना

ममता कालिया कहती है कि ''ज्ञान अपने शहर को लेकर उसी तरह उनकी ही तीव्रता से हर समय महसूस करते हैं। जितनी तीव्रता से कोई अपनी प्रेमिका के बारे में शुरू दिनों में महसूस करता है । यह शहर ज्ञान की धमनियों में रक्त बनकर दौड़ता है । ज्ञान इसके रेशे रेशे से परिचित हैं ज्ञान इनकी रग रग से प्रेम करता है । यह शायद इसलिए है । क्योंकि ज्ञान के लिए यह शहर शहर नहीं एक निहायत निजी रहस्यमई दुनिया है। जिससे जुड़ा उनका बचपन है किशोरावस्था है प्रेम प्रसंग है, मोहभंग है, चंद अजीज है, और कुछ निहायत नालायक किसम के दुश्मन हैं।''1 यहां पर लेखक केक कहने का तात्पर्य यह है कि शहर के बिना ज्ञानरंजन अधूरे हैं, तथा जो वह है, उनके शब्द व्यंग्य भंगिमा भी उन्हीं से निकलती है, और यह पहचान होने उस शहरी समाज से ही मिलता है ।जिसके वे स्वयं एक हिस्सा रह चुके हैं । आदमी खुद के सत्य को पूरी तरह जानता और पहचानता भी है। तथा पूरे विश्वास से कह भी सकता है ।

वह शहर उनकी आत्मा और शरीर दोनों एक ही बने हुए हैं। जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर अधूरा है। उसी प्रकार इलाहाबाद शहर के बिना ज्ञान रंजन के कहानियां अधूरी सी लगती है। इन्होंने शहर के लैंपपोस्ट तक को अपनी कहानियों में स्थान दिया है । इस पर वह लिखते हैं कि ''रात के सन्नाटे में एक अभूतपूर्व रोमांस के साथ मैंने अपने प्यारे शहर को देखा है ।वह रात उजाले की प्रतीक्षा में उड़ी हुए ,नींद की एक सुखद पर बेचौन रात थी ,पता नहीं एक अजीब भयानक से विराटता के ख्याल मन पर छोटे–छोटे टुकड़ों में बनते बिगड़ते रहे। जैसे नगर इलाहाबाद की आत्मा में बहुत क्रांति है ,अपने आप लोग काम कर रहे हैं । बुधिया किसी एक रचनात्मक परिवेश के लिए सक्रिय हैं ,स्थूल के नाम पर यह शहर जैसे परमशुन्य हैं । लेकिन धसने पर।''2

ज्ञानरंजन शहरी जीवन के एक संवेदनशील कहानीकार है ।इन्होंने अपनी कहानियों में शहरी जीवन को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इनका शहर के प्रति अत्यधिक प्रेम दर्शाया गया है। इसके साथ साथ ही उनके भी दूषित होने की, जो भी आशंका आशंका है। वह शहरी परिवेश के प्रति उनकी संवेदनशीलता को प्रदर्शित करती है। तथा इसके विकास और बदलाव की विडंबना ही कहा जाए, तो कोई अतिशयोक्ति न होगी।''जिसमें रचनात्मक आधार का विद्रूपन और ढहना, शहर का विद्रोहपन और उसका ढहना है। ''3 यहां पर लेखक ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि रचना प्रक्रिया कहानी में शहर के बिगड़ते वह बनते हुए, रूप पर चिंता व्यक्त करते हुए कहते हैं कि ''हमारे शहर में इस प्रकार के संभावना नहीं बची थी। मैंने बहुत दिन तक ,पुरानी इमारतों के सौंदर्य, तारकोल की सड़कों, बहुत से हिस्सों की आरण्यक जैसी शांति, पेड़ पौधों की बहुतायत तथा खाने–पीने की अच्छी दुकानों पर गर्म किया। देखते–देखते इमारतें टूटती गई, आहतो मैं सी आर बस गए तारकोल की चमचमाती सड़कें गड्ढों में भर गई ,और वृक्षों की प्रतियां कम हो गई ठूंठ निकलने लगे।''4

मनहूस बंगला कहानी में एक शहरी व्यक्ति अपने कुछ समय के लिए स्वास्थ्य लाभ के लिए दार्जिलिंग चला जाता है। तथा वहां पर पुराने बंगले में रहने वाले सदस्यों के लिए विचार उसी ढंग से करने लगता है। जिस प्रकार कुछ बहुत पुरानी अत्यधिक काल्पनिक व्यक्ति अपरिचित एवं अनजान वस्तुओं के बारे में मन ही मन सोचते हुए ,अनेक उतार चढ़ाव वाले मधुर और रोमानी सब अपन जाल में फस जाता है। वह अपने सपनों को पूरा करने के लिए उसी बंगले में एक भोली सी औरत भी दिखाई देने लगती है। परंतु वह दो बरस बाद व्यक्ति द्वारा दार्जिलिंग में आता है। और यह सुन कर हैरान हो जाता है कि न केवल बंगले मैं रहने वाला परिवार पूरी तरह से बिखर गया है। वह

भोली सी युक्ति परिवार के नौकर के साथ कोलकाता चली गई है।

आधुनिक समय का एक युवक नौकरी करने के लिए बाहर गया हुआ घर वापस लौट कर आता है। तो उसने घर के प्रत्येक सदस्य के प्रति अपने मन में आलोचना का दृष्टिकोण बनाए हुए हैं, या फिर वह स्वयं को उनसे अलग समझने और अलग महसूस करने लगता है। मानव है। जैसे अकेला ही विकास की अगली अवस्था में प्रवेश कर गया हो बाकी सब लोग या पुराने पीढ़ी को लेकर ही चल रहे हो, उसमें कुछ रूप में बदलाव हो रहे हो अपने शहर वापस लौट कर आया हुआ, युवक जब अपनी पहली प्रेमिका को देखता है ,तो वह शादी कर चुकी होती है। शादी के रूप में उसे देख कर रहे हैरान हो जाता है। तथा उसके व्यवहार और उसके पति के छिलछिलेपन को देखकर पति की समृद्धि और अपने धनाभाव के संदर्भ में एक अराजकता व नकारात्मकता की की मनोदशा में प्रवेश कर जाता है। तथा इस पर वह कहता है। ''मैंने अभी कई बार उधर देखा है ।जबकि थोड़ी देर पहले ही मैंने यह भी कहा था ,कि दनादन ढेर सारी राइफल छूट जाए छूट दे रहे, और तब तक न बंद हो, जब तक कि मेरे बूढ़े रिटायर्ड बाप के कांपते हाथों से किया गया ।वह मनीआर्डर मुझे ने मिल जाए ,जो वह 100 की गरीब पेंशन में मुझे एक कलरक होने की उम्मीद में भेजता रहता है।''5

'रचना प्रक्रिया' कहानी में बड़े शहर से आई हुई उसकी प्रेमिका अंततः है, उस अपने प्रतिनिधि प्रेमिका से अलग दिखाई देती है। जिससे वह साथ में आठवें दशकों की यहां पर हिंदी फिल्मों के अल्हड़ शौक और सतही अंदाज में भावुक नायिका के रूप को दर्शाया गया है। तथा वह साथ ही पुराने पन के विपरीत जीत की आधुनिकता गेलमर के रूप में दर्शाई गई है। यहां पर वह लिखते हैं कि ''जहां तक मेरी प्रेमिका का पसंद है, वह बड़े शहर की लड़की थी। बड़े शहर की लड़कियों के साथ एक खास बात यह होती है कि उनका सतीत्व कोई चुरा ले या लूट ले जाए, तो उन्होंने परेशानी है। आप सोच नहीं होता। दूसरी बात यह है कि उनका सती तब हरण कर लेना आसान भी नहीं है। बे बड़ी चतुर होती है और अगर मैंने सहाय तो अधिक से अधिक आप उनकी लंगोटा लेकर भाग सकते हैं बस में , सड़क की भीड़ में ,घर के नौकर चाकर और उन दोस्तों को, जिनसे अजीज आ जाती है इतना सर्कस तो यूं भी 'अलाउ' कर देती है।''6

'चुप्पियाँ कहानी ' में शहरी युवक अंदर ही अंदर नैनों से अत्यधिक प्रेम करता है ,और उसकी हर छोटी से छोटी हरकत को ध्यान में रखता है ।लेकिन वह ऊपर से निरंतर बेलगाम तथा अलग–थलग दिखाई देता है, उधर मेनू भी किंचित उत्सुक रूप में दर्शाई गई है। उसका बचपना तथा सीधा सादा भोला पन युवक के लिए पर्याप्त रहस्य बनता जा रहा था। गांव की अल्हड़ और सीधी–सादी सरल स्वभाव की लड़की के लिए शहरी युवक का यह आकर्षण अनेक कथा स्थितियों की याद दिलाता रहता है। जो प्राय बंगला उपन्यासों में दर्शाई गई है ,तथा कहानी के अंत में भी पूर्व परिचित सा लगता है। जब वह युवक नैनो से बिना कुछ कहे चुपचाप गांव छोड़कर शहर लौट जाता है ।क्योंकि उस भावुकता और रूमानी पन के बावजूद ज्ञानरंजन की कहानियां लगातार अपने अलग परिवेश को संदेह की दृष्टि से प्रदर्शित करती जा रही है ।यहां पर लेखक ने प्रायर एहसास किया है कि ''नए समाज में वास्तविक भावना नहीं होती ,बल्कि एक प्रकार की कृत्रिमता और झूठा होने की भावुकता के स्तर के नीचे छिपी होती है। 'खलनायिका और बारूद के फूल'या 'मैं' सुमन अपने प्रेमी से यह वादा अवश्य करती है कि वह अपने पिता की मर्जी के विरुद्ध या तो सिविल मैरिज करेगी या दोनों साथ–साथ आत्महत्या कर लेंगे ,किंतु परिवारिक दबाव पढ़ते ही तथा साथ ही छोटी बहन का प्रेम संबंध देकर उसका विचार बदल जाता है।''7

'पिता कहानी' में पिता का परिवार शहरी मध्यम वर्गीय परिवार है ।पिताजी के पास सभी सुख सुविधाएं पूरे संसाधन है। परंतु फिर भी वह उनका प्रयोग नहीं करना चाहते ।क्योंकि वह अपना एक साधारण जीवन व्यतीत करना चाहते हैं, पर वह उपभोक्तावादी मध्यम वर्ग के हिस्से होते हुए भी, उपभोक्तावादी नहीं देखना चाहते ,तथा सुख सुविधाओं का आनंद नहीं उठाना चाहते, वह अपना एक सरल स्वस्थ जीवन जीने में खुश दिखते हैं ।इस पर वह लिखते हैं कि ''नए परिवर्तन के दौर में जब मध्यम वर्ग दो उपभोक्तावाद का शिकार हो चुका हो, ऐसे में पिता का ऐसा ना हो, ना पिता विरोधी होना ही था। पिता क्या गांधी के रूपक नहीं लगते?''8

पिता का अनैतिक अर्थशास्त्र उनके नैतिक आचरण का ही एक हिस्सा है। यहां पर क्या पिता यह डोंग यह कार के कारण कर रहे हैं। या उनके जीवन में सिद्धांत और व्यवहार के प्रति अपनी नैतिकता है। क्या पिता सुख सुविधाओं से दूर है। तथा दूसरा जो भी कुछ लेकर आता है ,चाहे वह कितनी भी मूल्यवान वस्तु क्यों ना हो पिता उस वस्तु से प्रभावित नहीं होते, वह अपनी हैसियत जानते है, कि हम कितना ग्रहण कर सकते हैं कितना कमा सकते हैं ।वह उतना ही खर्च करते हैं। यह सोच देख कर मानो ऐसा लगता है पिताजी महात्मा गांधी का ही एक रूप है ।तथा उन्हीं के द्वारा बनाए गए आर्थिक ढांचे की याद दिलाता है। उनका मानना था कि जो आर्थिक ढांचा बनाया जाए, विकास का मतलब उपभोग में कमी और संसाधनों की बचत को ध्यान में रखकर ही तैयार किया जाए, आर्थिक ढांचा या पश्चिमी उपभोग को बढ़ावा देने वाला है ।वर्तमान शहरी मध्यम वर्ग इसी बीमारी का शिकार होता जा रहा है, और पिता उनके लिए आईना बनने हुए हैं। पिता का यह रूप अपनी स्वाभाविकता मैं रहते हुए गांधी तथा नेहरू के समय में निर्मित खाटी संतोषी हिंदुस्तानी पिता की याद दिला देता है। 'पिता' के इस चरित्र में अगर उस समय का मध्यमवर्ग अपना असली रूप देखता तो पिता का पूरा चरित्र हमें आदर्श वादी लगता है। क्योंकि उल्टा पिता को दोषी कहते हैं। यह उनका नैतिक पतन है, तथा जो उन्हें अच्छी बातें अपनाने से भी मना कर रहे हैं।

इस शहरी परिवेश के बिना किसी चरित्र घटना का कोई भी अस्तित्व नहीं रहता ज्ञानरंजन की कहानियों 'मैं' जिसे प्रेम को लेकर उधेड़बुन में रहता है ।उसी प्रकार शहर को भी लेकर ऐसा ही चलता रहता है। शहर सब कुछ इसी का केंद्र है। 'अनुभव' के 'मैं' का शहर के प्रति घनिष्ठ लगाव है। इस पर लेखक कहता है कि ''शहर मेरी दुनिया का बनता जा रहा था ,मेरा घर, मेरे दोस्त का घर, मेरी प्रेमिका का घर ,यहां सारे घर इकट्ठे हो गए थे। यहां की सड़कें, यहां का अमरुद, यहां की आकाश रेखा और क्या–क्या नहीं। सब कुछ अच्छा था। इस अच्छे पर जकड़ तगड़ी होती जा रही थी। ऐसा डर था ।कि जकड़ एक दिन जंग से खडगदा जाएगी और कभी नहीं खुलेगी।''9

शहरी जीवन का आकर्षणः

स्वाधीनता पश्चात के मध्यम वर्ग की परिस्थितियां एक तरफ थी । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद औपनिवेशिक निरंतरता ने होती। तो आज मोहभंग भी नहीं होता और ना ही गांव और शहरों का विकास स्वयं उस उपनिवेश इक निरंतरता का आख्यान लगता तथा ज्ञानरंजन की कहानियां अपनी सृजनात्मकता 'मैं' इसी विकास की कहानियां की रचना की गई है। वह लिखते हैं कि ''हमें अपने प्रदेश बीमार सिकुड़ता हुआ, और वास्तविक दुनिया से भिन्न लगने लगा था। कस्बा निहायत गंदा था ।मक्खियां धूल उड़ाती गाड़ियां और विश्राम करते हुए लोगों का साम्राज्य चारों तरफ फैला था ।लोगों ने मृत्यु पर अपने तरीके से विजय प्राप्त कर ली थी।''2 यहां पर लेखक ने चिंता व्यक्त करते हुए, आजादी के बाद का वर्णन करते हुए कहते हैं। यह यह आजाद भारत का कस्बा जिसका विकास से कोई लेना देना नहीं है ।यह ऐसे ही एक कस्बे का परेशान युवक है। मनोहर इसने बहुत बड़े–बड़े खवाब देखें हैं। वह इस कचरे से बाहर निकल कर आसमान की उड़ान तथा बुलंदियों को छूने की इच्छा रखता है। वह यहां से बाहर निकल कर अपने ख्वाबों पर सवार लंबे समय के बाद बहन मैं से कहता है ।वह गर्व से बोलता है कि

'' आज मैं पहली बार खुश हुआ हूं ,मैं जैसे बंदी ग्रह की यातना से रिहा होने जा रहा हूं ,वह आखिर तक रोष में था और कस्बे के प्रति नफरत में।''10

स्वतंत्रता के पश्चात मध्यम वर्ग के लोगों ने जो सपने देखे थे वह चकनाचूर हो गए तथा उन्हें जीवन बंदी ग्रह के समान लगने लगा। जिस प्रकार बंदी गृह में व्यक्ति को यातनाएं दी जाती है ।उसी प्रकार वह अपने जीवन में अनेक मुसीबतों से लड़ रहे थे। मध्यमवर्ग ने आजादी के लिए बढ़ चढ़कर भाग लिया था ।और अपने मन में अनेक उमंग भरे सपने लिए हुए थे। लेकिन ऐसा कुछ होता नहीं है। उसी प्रकार मनोहर अपनी मनोस्थिति का वर्णन करता है। मनोहर मुर्दा कस्बे को छोड़कर शहर के मध्यम वर्ग का हिस्सा बनने चाहता है। परंतु मध्यम वर्ग में प्रवेश का रास्ता ना तो सीधा है ,और ना ही सरल यह रास्ता तो लोगों को गरीबी की तरफ खींचता ले जा रहा है ।परंतु मनोहर गरीब नहीं रहना चाहता था। अपनी इच्छा पूरी करने के लिए वह कोई दूसरा रास्ता अपनाता है ।टेढ़ा रास्ता यह कहानी कस्बे और शहर के विकास और विस्थापन की कहानी है इस रास्ते पर चलते हैं ।नए वाले सभी लोग विकास की चरम सीमा पर पहुंच गए ।परंतु जिन लोगों ने यह रास्ता नहीं अपनाया, वे लोग अपने ही गांव व कस्बों में विकास की यात्रा में बिछड़ते चले गए टेढ़ा रास्ता चालाक और लालची लोगों के लिए लाभदायक सिद्ध होता है। इस रास्ते से निम्न वर्ग और मध्यम वर्ग की यात्रा करने वाले लोग देखने को मिलते हैं ।जो यह नहीं कर पाते उनके लिए और आगे के रास्ते बंद हो जाते हैं ।विकास के लिए व्यक्ति को हर रास्ता बनाना पड़ता है ,चाहे वह कठिनाई भरा हो चाहे, सरलता से पाया जा सके जो व्यक्ति कठिन कार्य से घबराता है। वह अपनी मंजिल को पाने में असफल हो जाता है। इसी प्रकार लेखक ने मनोहर के माध्यम से यह बात समझाने की प्रयत्न किया है।

इसी प्रकार दूसरी तरफ है, 'मैं' जानता है कि इस शहर पर मनोहर जैसे वनमानुष ने कब्जा कर रखा है। परंतु गनीमत है कि यह शहर के कुछ ही पैसों पर खेला है ।बाकी पूरा इलाका गरीब मोहनकश का है। इस पर वह लिखते हैं कि ''असल में यह इलाका, यह 'स्पेस' ज्ञानरंजन के प्रगतिशील चेतना, विचार –दृष्टि और सरोकारों का इलाका है। असल में कहानी का असली इलाका तो यही है उनका, जहां आकर अटकते हैं, वे ठहरते हैं, वे जैसे असली गंतव्य यही हो।''12

शहरी विकास और परिवेश को ध्यान में रखते हुए ज्ञानरंजन की कहानियों में बेचौनी व परेशानी भरी परिस्थितियां दर्शाई गई है ,और वह बेचौनी और विडंबना में बहुत कुछ कहती भी है। वह दुनिया मैं होने वाले बदलावों और विकास को देखते हैं ।ज्ञानरंजन इन चिंताओं को नोटिस करते रहे हैं ।इन्होंने अपने सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश के प्रति अत्यंत चिंता जताई है ।उन्हें पता है कि यह विकास बेहतर के साथ–साथ बहुत कुछ ऐसे भी बदलाव में आएंगे ।जो हमारे संस्कारों के लिए एक चिंता का विषय बन जाएगा। विकास के यह लहर जहां तक भी पहुंचेगी वहां बेचौनी निराशा परेशानी आदि का ही कारण बनेगी। पूंजीवादी लोग विकास का मॉडल हैं ।विकास के लालच ने मध्यम वर्ग के लोगों को एक अंधेरी दलदल में फसा दिया है ।इस पर कहानीकार अपनी चिंता व्यक्त करते है वह इसे अनेक प्रकार से समझाने का प्रयास कर रहे हैं। कभी पात्रों के व्यवहार से तो कभी जो माहौल में वे रचते हैं। उसमें सतीश का घूसखोर होना शेरों वाले कलब में ब्लू फिल्म, कातिलाना या श्रीमती नथानी का अपने ही पति के लिए अपनी आया को मैनेज करना ऐसे पात्रों और दृश्यों के दवारा अपने समय में हो रहे। शहरी समाज के गिरते स्तर को मार्मिक ढंग से दर्शाया है। और उनके प्रति जागृत रहने के लिए भी सचेत किया है ।इस पर लेखक लिखते हैं कि '' 'मैं' चकलो की यात्रा गांजा मंडलीय नदियों के किनारे के मेले और भांति भांति की शराबों के स्वाद का दलदल है। यह शहरी मध्यम वर्गीय दुनिया के अनुभवों का दलदल है। जिसमें विकास की संवेदनशीलता और मानवीयता फंसी हुई है।''13 यहां पर लेखक ने मध्यम वर्ग के गिरते हुए मानसिक सर तथा विचारों में असामजस्सिता को बार–बार प्रदर्शित किया गया है। तथा यहां पर विघटित ध मानसिकता का भी वर्णन किया गया है। पारिवारिक मानवीय संबंधों के संदर्भ में अपनी मां को यू विमेन और भाई की आत्महत्या या मर जाने की संभावना पर संवेदनहीन प्रतिक्रिया सत्य है। वह अपनी सार्वजनिक छवियों और अभी व्यक्तियों में अश्लील हो चुका है। अपने अजीज के मर जाने पर शोक मनाने की बजाए समोसे और संतरे खाता है। यह सब विकास की देन है ।जिस प्रकार तकनीकी विकास बढ़ता गया उसी प्रकार मनुष्य अपने संस्कार और संस्कृति भूलता गया। भाई –भाई का दुश्मन बनता गया ,सब अपने स्वार्थ पूर्ति के लिए किसी भी हद तक नीच हरकत कर सकता है। अपने लाभ के लिए वह अपने की जान तक ले सकते हैं ।परिवार टूटते गए और छोटे छोटे टुकड़ों में बंट गया है। मोहभंग हो गया है ,अपने अपने से अनजान नजर आने लगे हैं। परंतु यह मध्यमवर्ग अब और भी अधिक चला और शहरी होने के नाते उनकी चालाकियां और भी मजबूत हो गई है। 'मैं' और कुंदन सरकार की तरह कुंदन सरकार 'मैं' से कहता है कि तुम देखो मैं संकोच पी सकता हूं ,फिर भी थर्रा क्यों पीता हूं ,सड़कों पर पैदल क्यों भटकता हूं ,बोरा खादी क्यों पहनता हूं , गाड़ी होते हुए भी पैदल क्यों चलता हूं। जबकि मैं लेखक नहीं हूं बस बुद्धिजीवी हूं।''14

निष्कर्ष

क्रांति या विकृति नहीं अपितु विस्तार लेती ज्ञानरंजन यह बात अच्छी तरह से जानते हैं कि क्रांति यों

को स्थगित शहरों ने ही किया है। गांव के लोगों ने इसे स्थगित नहीं किया है। गांव और कस्बे तो शेरों के शिकार हो चुके हैं । फिर भी लोग शहरों में जाकर बस रहे हैं। क्योंकि पूंजीपति लोग अपनी पूंजी का आपने ऐसा राम के लिए ही प्रयोग करते हैं। वह समाज में लोगों के लिए कोई भी सुविधाजनक कार्य नहीं कर रहे हैं। जिस कारण होने आर्थिक परिस्थितियों से जूझना पढ़ रहा है। निम्न वर्ग पूंजीपति लोगों का शिकार हो चुके हैं। मध्यमवर्ग इसी आर्थिक असमानता का शिकार है। इस असमानता के कारण वह जिन भटका हो और बुराइयों का शिकार हो गया निबंध वर्ग और मध्यम वर्ग की सभी परिस्थितियों को ज्ञानरंजन की कहानियों में बारीकी से अध्ययन किया गया है। यथार्थ का नगन रूप शहर के मध्यम वर्ग के दिमाग में बसे शहर के रूमानी एहसास को झटका देता है ज्ञानरंजन भी शहर के रहने वाले हैं ।वह इस झटके को महसूस करते हैं। तथा उन्हें अच्छे से जानकारी भी है। शहरी परिस्थितियों के टिप्स इन की हर कहानी में किसी न किसी रूप में प्रदर्शित किए गए हैं ।जो हमें हमारे समाज से परिचित करवाते हैं।

संदर्भ सूची

1. ममता कालिया, कहानीकार ज्ञानरंजन , पृष्ठः 64– 65
2. वही, पृष्ठः13
3. दुर्गा प्रसाद गुप्त, पाखी, पृष्ठ :53
4. ज्ञानरंजन ,रचना– प्रक्रिया ,सपना नहीं ,पृष्ठः41
5. ज्ञानरंजन ,क्षणजीवी, पृष्ठः42–43
6. ज्ञानरंजन ,रचना –प्रक्रिया, पृष्ठः 122
7. आनंद प्रकाश ,कहानीकार ज्ञानरंजन, पृष्ठ :123
8. दुर्गा प्रसाद गुप्त ,पाखी, पृष्ठः 53
9. ज्ञानरंजन, अनुभव, पृष्ठ :211
10. ज्ञानरंजन ,बहिर्गमन ,पृष्ठः189
11. वही, पृष्ठः 190
12. दुर्गा प्रसाद गुप्त ,पाखी, पृष्ठः51
13. ज्ञानरंजन,अनुभव, वही ,पृष्ठः 54
14. ज्ञानरंजन, घंटा ,वही, पृष्ठः 108